न्याय दर्शन एक परिचय
B.A.(H) II Year
Paper - 3, Unit (II)
Lecture-4

3

डॉ० विकास सिंह —

2. न्यायदर्शन "सामान्य परिचय"

'प्रमाणै: अर्थपरीक्षणं न्याय:'[1] कहकर वात्स्यायन ने 'न्याय' विचार की उस प्रणाली को कहा है जिसमें वस्तु तत्व के निर्धारण के लिए सभी प्रमाणों का उपयोग किया जाता है। वास्तव में यह न्यायविद्या सम्पूर्ण विद्याओं को प्रकाशित करने का उपाय और समस्त कर्मों का साधक व समग्र धर्मों का आश्रय है -

"प्रदीप: सर्वविद्यानामुपाय: सर्वकर्मणाम्।
आश्रय: सर्वधर्माणां विद्योद्देशे प्रकीर्तिता ॥"[2]

अक्षपाद गौतम न्याय दर्शन के प्रवर्तक तथा सूत्रकार हैं। उनके द्वारा रोपित यह विशाल न्याय वृक्ष घने अमृतरसवर्षी फलों व सन्दर्भों से भरा हुआ है -

"अक्षपादप्रणीतो हि विततो न्यायपादप:।
सान्द्रामृतरसस्यन्द फल सन्दर्भनिर्भर: ॥"[3]

'न्यायदर्शन में कुल पाँच अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। प्रथम अध्याय में ग्यारह प्रकरण, 61 सूत्र, द्वितीय अध्याय में 13 प्रकरण, 133 सूत्र, तृतीय अध्याय में 16 प्रकरण, 145 सूत्र, चतुर्थ अध्याय में 20 प्रकरण, 118 सूत्र तथा पाँचवे अध्याय में 24 प्रकरण, 67 सूत्र हैं। इस तरह न्याय के 528 सूत्रों में प्रमाणादि 16 पदार्थों का विशद् वर्णन है।[4]' 84 प्रकरण

न्यायसूत्रों पर वात्स्यायन ने भाष्य लिखा जिसका प्रमाण उन्हीं के द्वारा कथित श्लोक में मिलता है -

---

1- न्या० भा० 1, सूत्र, पृ० -3

2- न्या० भा० 1, सूत्र, पृ० - 5

3- न्या० म० श्लो० -12, पृ० - 10

4- त० भा० - प्र० भा० - पृ० V

"योऽक्षपादमृषिं न्याय: प्रत्यभाद् वदतां वर:।
तस्य वात्स्यायन इदं भाष्यजातमवर्णयत्॥"[1]

न्यायभाष्य पर वार्तिक प्राप्त होता है। न्यायवार्तिक के लेखक 'भारद्वाज' वार्तिक के अन्तिम श्लोक में नाम आने से हो सकते हैं-

'यदक्षपादप्रतिभो भाष्यं वात्स्यायनो जगौ।
अकारि महतस्तस्य भारद्वाजेन वार्तिकम्॥"[2]

किन्तु न्यायवार्तिक पर तात्पर्यटीका लिखने वाले वाचस्पति मिश्र ने न्यायवार्तिक का लेखक उद्योतकर को माना है। अपने ग्रन्थ के आरम्भ में वे लिखते हैं -

"इच्छामि किमपि पुण्यं दुस्तरकुनिबन्धपङ्कमग्नानाम्।
उद्योतकरगवीनामतिजरतीनां समुद्धरणात्॥"[3]

उदयनाचार्य ने 'न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका' पर 'परिशुद्धि' व्याख्या की रचना की। इस प्रकार न्यायदर्शन में इन पाँच ग्रन्थों का बहुत महत्त्व है। बाद में गंगेशोपाध्याय के 'तत्त्वचिन्तामणि' से नव्य न्याय का प्रादुर्भाव होता है।

3. 'न्यायशास्त्र की प्रवृत्ति'

न्यायभाष्यकार ने 'त्रिविधा चाऽस्य शास्त्रस्य प्रवृत्ति: - उद्देशो लक्षणं परीक्षा चेति।"[4] कहकर न्यायशास्त्र की प्रवृत्ति 3 प्रकार की मानी है - उद्देश, लक्षण व परीक्षा।

---

1. न्या. भा., 5/2/24 न्यायदर्शनम्, पृ. 660

2- त. भा. प्रस्तावना, पृ. XIII

3- न्या. वा. ता. टी., पृ. 1

4- न्या. भा. 1.1.3 की भूमिका, पृ. 21